NPL हमारा संकल्प हो।
यह आंदोलन नहीं, चेतना है,
यह निषाद का नव-कल्प हो।
आज जो उठे हैं नाव लेकर,
कल राष्ट्र की दिशा बदलेंगे।
जो इतिहास में हाशिए पर थे,
अब वही भविष्य रचेंगे।
जागो निषाद! उठो निषाद!
यह समय नहीं है रुकने का।
निषाद राष्ट्र अब बनना है,
हर बंधन आज है टूटने का।
सलाह कर राह बनाओ, निषाद राष्ट्र
विमर्श से 2026 के इस वर्ष को निषाद
क्रान्ति का ऐतिहासिक वर्ष बनाओ।
तभी नव वर्ष के संघर्ष सार्थक होगें।
जय भारत,
जय निषाद।
राजेन्द्र सिंह केवट

निषाद पर्सनल लॉ की कापी प्राप्त करने के लिए निषाद समाज की सदस्यता संस्था के क्यू आर कोड पर 100/रूपये भेजकर उसके इवेंट आइडी के साथ संस्था के पते .या मोबाइल नं पर भेजिए। पीडीएफ तत्काल आपके मोबाइल पर भेज दिया जायेगा। हार्ड कापी यदि चाहते हैं तो रजिस्टर्ड डाक का शुल्क भेजने पर आपके पते पर भेजा जा सकेगा।

इस पत्रक के लिए सहयोग राशि मात्र 10 रूपये ट्रस्ट में दान करें।

यूको बैंक
UCO BANK

निषाद समाज (ट्रस्ट)

कार्यालय निषाद समाज (ट्रस्ट)
22582/01, पवित्र नगर, लालकुआँ, पोस्ट पोली पाथर, ग्वारीघाट रोड, जिला जबलपुर, मध्यप्रदेश पिन कोड 482008
Phone: 9755013821
E-mail: nishad.pariwar.samaj@gmail.com

निषाद समाज (ट्रस्ट)

निषाद जागरण 1
राजेन्द्र सिंह केवट

जागों निषाद नाम की हस्ती,
खूशहाल कर दो हर गाँव हर बस्ती।

Mob 7897314809

निषाद जागरण 1

निषाद विमर्श व चिंतन की चीख

निषाद समाज से हटेंगे तो मिटेंगे,
बँटेंगे तो कटेंगे और हर स्तर में कुचले जाएँगे।
हाथ से हाथ मिला साथ लेकर चलेंगे,
तभी सशक्त, समृद्ध बनेंगे।
इतिहास गवाह है इस धरती का,
नीर-नाव-धनुष हमारे संस्कार।
पर आज भी षड्यंत्रों के बीच
हमारा खून सस्ता, जीवन लाचार।
मेरठ की धरती सिसक उठी,
जब सोनू कश्यप चुप करा दिया गया,
मैनपुरी की हवा काँप गई,
जब बेचुलाल कश्यप को जला दिया गया।
ये केवल दो नाम नहीं हैं,
ये पूरे समाज की चीख हैं।
ये केवल निषाद का दर्द नहीं,
ये मानवता को खुली चुनौती है।
आज सवाल किसी व्यक्ति, जाति का नहीं,
आज सवाल इंसान होने का है।
जो चुप रहा, वो भी अपराधी है,
ये समय सच से रूबरू होने का है।
घोर निंदा! भर्त्सना!
हर उस सोच की जो हिंसा को जन्म दे,
हर उस व्यवस्था की
जो न्याय को जाति में तौल दे।
निषादों! अब शोक नहीं,
अब केवल जागरण चाहिए।
अब उपेक्षा सहने की नहीं,
संविधानिक अधिकारों की गर्जना चाहिए।
जो हमें बाँटने, काटने आए,
उसे पहचानो—चुप मत रहो।
जो अन्याय करे,
उसके विरुद्ध संगठित होकर खड़े रहो।
याद रखो—
अलग-अलग रहोगे तो मिट जाओगे,
एक साथ चलोगे तो इतिहास बनाओगे।
आज यह घटना केवल समाज से नहींसंवेदनशील मनुष्य से
प्रश्न करती है—
क्या हम अन्याय देखकर भी
खामोश रहेंगे, या इंसान बनकर खड़े होंगे?
निषाद जागो—
यह समय है, यह अवसर है, यह संघर्ष ही
हमारी आने वाली पीढ़ियों का उत्तर है।
जय भारत,
जय निषाद
निषाद राजेन्द्र सिंह केवट (20/01/2026)

सच से भागो नहीं जागो

हे निषादों।
अब उपनाम नहीं, एक नाम बनो,
अब बिखराव नहीं, तूफ़ान बनो।
अब घाट–घाट में बँटकर नहीं,
एक धारा, एक पहचान बनो।
अब सहन नहीं, समझौता नहीं,
प्रतिरोध की प्रचंड चट्टान बनो।
अब इतिहास के पन्नों में नहीं,
वर्तमान की हुंकार बनो।
अब मछुआरे की मजबूरी नहीं,
जल–संस्कृति का अधिकार बनो।
अब नाव केवल पेट भरने का साधन नहीं,
स्वाभिमान की पताका बनो।
अब भीख नहीं, कृपा नहीं,
अपने हक़ की उद्घोषणा बनो।
अब जातियों की दीवारें गिराओ,
चेतना का महासंग्राम बनो।
अब डर छोड़ो, भ्रम तोड़ो,
निषाद क्रांति का एलान बनो।
उठो निषाद!
अब समय नहीं—इतिहास बनो।
अब मौन नहीं— आवाज़ बनो।
अब बहम नहीं, आगाज बनो,
अब घटक नहीं, निषाद समाज बनो।

निषाद राष्ट्र विमर्श क्रांति

हे निषादों!
अब चुप्पी तोड़ो, मौन जलाओ,
हर घाट–घाट से स्वर उठाओ।
सदियों से दबे थे जिनके स्वर,
अब वही इतिहास लिखने आओ।
नाव हमारी, धार हमारी,
जल–जंगल–जमीन हमारी है।
फिर क्यों क़ानून पराया लिखे,
जब संस्कृति स्वयं अधिकारी है।
एक चिंगारी जागी है आज,
नर्मदा से सिंधु तक फैल गई,
कश्मीर से कन्या कुमारी एक,
हर निषाद के रक्त कण में,
स्वाभिमान की आग बहक गई।
निषाद राष्ट्र विमर्श पुकारे—
“पहचान नहीं, अधिकार चाहिए!”
भीख नहीं, दया नहीं,
संविधान में सम्मान चाहिए।
अब संगठन अलग–अलग नहीं,
नाम भले अनेक पर लक्ष्य एक,
माझी–केवट–धीवर–मल्लाह,
एक ही लहर, एक ही नेक।
आओ गढ़ें निषाद पर्सनल लॉ,
अपने संस्कार, अपनी रीति।
परंपरा हमारी विधि बने,
यही है आत्मनिर्भर नीति।
जो जन्म से जल का अधिकारी,
उससे जल का हक़ छीना गया,
जो संस्कृति का रक्षक था,
उसे ही अपराधी गिना गया।
अब नहीं सहेंगे अन्याय विधान,
अब नहीं मानेंगे झूठे लेख।
अपनी सभ्यता, अपना संविधान,
अब खुद लिखेगा निषाद एक।
हर संगठन, हर मंच से नाद हो—